E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
Impact Factor: RJIF 5.12
IJAAS 2020; 2(1): 27-28
Received: 13-11-2019
Accepted: 15-12-2019

रीना रानी
सहायक प्रवक्ता, (हिन्दी विभाग),
आई0बी0 (पी0जी0) कॉलेज,
पानीपत, हरियाणा, भारत

Corresponding Author:
रीना रानी
सहायक प्रवक्ता, (हिन्दी विभाग),
आई0बी0 (पी0जी0) कॉलेज,
पानीपत, हरियाणा, भारत

सामाजिक चेतना के अगदूतः प्रेमचन्द

रीना रानी

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य के महान लेखक प्रेमचन्द जी का जन्म 31 जुलाई 1980 को काशी में हुआ था इनके पिता का नाम अजाबराय था जो कुछ बीघे जमीन व बास रुपये में अपना मासिक खर्च करते थे । जब इनकी माता की मृत्यु हुइ ये सात वर्ष के थे । पन्द्रह वर्ष के थे तो इनका विवाह हो गया था। सोलहवे वर्ष मे इनके पिता का देहांत हो गया था । तो बाल्यावस्था में ही गृहस्थी की जिम्मेवारी उनके कंधो पर आन पडी थी। सौतेली मॉ का व्यवहार, बचपन में शादी आदि समस्याओं का सामना इन्होने बचपन में ही किया। इसलिए उनके ये कुछ अनुभव एक साथ बनकर उनके कथा साहित्य में झलक उठे थें। इन्होंने अपनी शिक्षा के लिए भी अत्यधिक संघर्ष करना पडा था। ये इंटर में दो बार फेल होने पर पास हुए। फिर इन्होने बी0ए0 उत्तीर्ण की। किंतु प्रेमचन्द को जॅहा वास्ताविक शिक्षा मिली वे विश्वविद्यालय दूसरे ही थे। उनके अध्यापक लमही के किसान बनारस के महाजन और किताबों के नोटस बिकवाने वाले बुकसेलर थें उनकी टेस्टबुके वे सैकडो उपन्यास थे। जो उन्होने लाईब्रेरियो, बुकसेलरों की दुकान और तमाखूवाले दोस्त के घर पर पढे थे। भले ही वे गणित पढने योग्य न रहे है वे हिन्दुस्तानी समाज का बीजगणित अच्छी तरह समझ गए थे और अपने उपन्यासो में बहुत से प्रश्न हल करने की प्रयास भी कर चुके थे। प्रेमचन्द हिन्दी साहित्य में काव्य सम्राट, पत्रकार, नाटककार और एक महान सम्पादक के रूप में विरव्यात है। वे साहित्य को मनोरंजन से उपर उठा कर जीवन की गम्भीर समस्याओं ओर यर्थाथ से जोडते है। उन्होने अपनी–अपनी अभिव्यक्ति को जनता तक पहुचाने के लिए साहित्य को चुना है क्योकि साहित्य ही जीवन की विस्तृत व्याख्या करने और परिवर्तन करने मे समर्थ है उन्होने अपने साहित्य का जो विषय चुना उनका आधार भारतीय नागरिक व ग्रामीण समाज के विविध वर्ग है वे साहित्य के साथ –साथ समाज के स्त्रष्टा भी रहे है। साहित्य में इनके आगमन को वरदान माना जाता है जो युगान्तकारी परिवर्तन ले कर आते है उन्होंने न केवल वर्तमान को लिखा बाल्कि युगद्रष्टा होने के नाते भविष्य को भी अपने साहित्य में उतारा है उनकी अभिव्यक्ति भविष्य में विश्वास रखनेवाली भारतीय जनता की अभिव्यक्ति है जो आज भी यह कहते हुऐ सुनाई पड रही है, '' यह अतं नही है और आगे बढो जब तक कि कर्मभूमि में विजय न हो, जब तक कि देश का कायाकल्प न हो, जब तक कि इस कर्मभूमि मे गबन और गोदान से होरी और रमानाथ का त्रस्त होना बंद न हो । और हमारा देश एक नई तरह का सेवा–सदन, एक नई तरह का प्रेमाश्रम न बन जाए'' [2]

प्रेमचंद से पूर्व कव्या–साहित्य की सर्जना किसी विशेष साहित्यक लक्ष्य को सामने रखकर नही की गई थी उनके मनोरंजन की साम्रगी जुटाने का ही प्रयास किया गया था प्रेमचन्द पहले कंथाकार थे। जो क्रांतिकारी परिवर्तन का महान संदेश लेकर साहित्य में उतरे । मानव जीवन से असंबद्व हिन्दी का उपनास साहित्य प्रेमचन्द का सक्रिय दिशा–निर्देश पा कर जीवन की वास्तविकता की ठोस चट्टान पर आ कर खडा हुआ उन पर कलम का अधिकारी हुआ । वे मानते है'' कि वही साहित्य चिरायु हो सकता है जो मानव की मौलिक प्रवृातियों पर अवलंबित हो । ईर्ष्या और प्रेम क्रोध और लोभ, भक्ति और विराग, दुःख और लज्जा, ये सभी हमारी मौलिक प्रवृात्तियों है इन्ही की छटा दिखाना साहित्य का परम उद्वेदश्य है और बिना उद्वदेश्य के तो कोई रचना हो नही सकती ।'' [4]

प्रेमचन्द गरीबी से परिचित थे। गरीब परिवार ही उनका जन्म और जीवन स्त्रोत था । अपने इस निजी अनुभव को उन्होंने अपनी रचनाओं में विस्तृत धरालल पर प्रस्तुत किया । सेवासदन से गोदान तक उन्होंने कथा –साहित्य मे यर्थाथवाद का इस प्रकार विकसित किया जिस तरह एक साहित्यकार बहुत कुछ कर पाता है। डॉ. रामविलास शर्मा जी कहते है ''वह एक यर्थाथ वाद कलाकार थे । वह जीवन की सच्चाई ऑकना चाहते थे जीवन के भ्रमों का खंडन करना चाहते थें। सेवासदन से गोदान उन्होने कथा साहित्य मे यर्थाथवाद को इस प्रकार विकसित किया जिस तरह एक ही साहित्यकार बहुत कम कर पाता है अपने यर्थाथवाद से उन्होंने हिन्दी कथा साहित्य के लिए राज मार्ग बना दिया है जिस पर नई पीढी के लेखक निर्भय होकर आगे बढ सकते है।'' [4]

आम जनता के लेखक होने के कारण उन्होंने अपने विचारों को आम भाषा में ही अभिव्यक्ति किया है जिनमे विचारों व भावनाओं का स्वाभाविक तरंग प्रवाह है

डॉ. रामविलास शर्मा के शब्दों में प्रेमचन्द शैलीकार न थे साहित्यकार थे वह भाषा नही लिखते थे अपनी वेदना लिखते थे इसी से पंडित के पहले जनता ने उन्हे अपनाया, आचार्य से पहले नागरिक ने उन्हे समझा उनको प्रत्येक मानव से सहानुभूमि थी तथा उनकी भाषा में प्रस्तुत करने में वे सिद्वहस्त थे । प्राणों का उत्सर्ग देकर उन्होने भाषा और भारत को संस्कार दिया।'' [5]

उपसंहार

कह सकते है कि हिन्दी में प्रेमचन्द ही ऐसे समर्थ कलाकार हुऐ जिनकी वाणी उत्तर भारत में सुदूर दक्षिण क्षेत्रों का स्पर्श करती है आज जनता की भाषा में रची उनकी रचनाओं के माध्यम से आम आदमी की समस्याओं को इन्होंने इतनी गहनता से पहचाना कि, उनकी जीवन दर्शन आज भी प्रासंगिक जान पडता है तभी हजारी प्रसाद द्विवेदी यह कहते है कि प्रेमचन्द के कथा साहित्य के अध्ययन से उत्तर भारत की समस्त जनता के आचार–विचार भाषा–भाव, आश–आकांक्षा, दुख'–सुख, रीति–रिवाजों को जान सकते है झोपडियों से महलो तक खोमचवालो, से बैंकों तक गावं से शहर की रंगीनियों तक अमीरों से कृषकों तक आपको इतने कौशल पूर्वक व प्रमाणिक भाव से अन्य कोई नही ले जा सकता। इतनी विविधता अन्यत्र नही मिलेगी। –''[6] उनका जीवन दर्शन आज भी प्रासंगिक जान पडता है निस्संदेह प्रेमचंद आज भी अपने साहित्य के रूप में हमारे बीच विद्यमान है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. रामविलास शर्मा, प्रेमचंद और उनका युग प्र0 20
2. डॉ. रामविलास शर्मा, प्रेमचंद और उनका युग, प्र0 17
3. प्रेमचंद, कुल विचार, प्र0 9–10
4. डॉ. रामविलास शर्मा, प्रेमचंद और उनका युग प्र0 – 150
5. डॉ. रामविलास शर्मा, प्रेमचंद और उनका युग प्र0 155
6. शिवरानी देवी, प्रेमचंद घर में प्र0 204